असंगघोष : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

कु. आशा

शोधार्थी, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, परिसर, अल्मोड़ा (उत्तराखंड) 263601

शोध सारांश :- 21 वीं सदी के प्रमुख हिंदी दलित साहित्यकारों में असंगघोष जी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। इनकी सर्जनात्मकता का मुख्य आधार समतापरक एवं न्याय आधारित समाज का निर्माण है। उच्च पदासीन होते हुए भी इन्होंने अपने समाज के लिए साहित्य रचा। इनकी रचनाधर्मिता में न केवल दलित चेतना का स्वर दिखाई देता है, वरन् उससे मुक्ति का रास्ता भी स्पष्ट दिखाई देता है। यह नहीं चाहते जो दलित होने का दंश इन्होंने झेला है, इनकी आने वाली पीढ़ी भी उसे सहन करे। इसलिए यह अपने साहित्य में बार-बार उन्हें उनके अधिकारों के प्रति जागरुक करते हैं। कम उम्र में ही इन्होंने पढ़ाई के साथ-साथ परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन भी किया है। इस शोध आलेख के माध्यम से इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को उभारने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द :- असंगघोष, दलित समाज, दलित साहित्य, रचनाधर्मिता, सर्जनात्मकता, बाह् आडंबर, संघर्ष, आक्रोश, नारी चेतना, सामाजिक चेतना, शिक्षा जागृति, मानवाधिकार।

मुख्य आलेख :-

जन्म :- असंगघोष का जन्म 29 अक्टूबर, 1962, मध्य प्रदेश के जावद नामक कस्बे में हुआ था। **"जो राजस्थान से लगा हुआ है। किसी जमाने में राजपूताना का हिस्सा हुआ करता था। आजादी के समय ग्वालियर रियासत वाला गांव था। बाद में वह मध्य प्रदेश में जुड़ गया। शुरुआत में 1944 से 57 के मध्य, मध्य भारत कहलाया। उसके बाद मध्य प्रदेश हो गया तो मैं मध्य प्रदेश के इस हिस्से में रहता हूं।"1**

पारिवारिक पृष्ठभूमि :- असंगघोष जी ने अपना बचपन बहुत ही गरीबी एवं अभाव में बिताया है। आर्थिक विषमता के कारण परिवार में सुख सुविधाओं का अभाव था। जीवन का संघर्ष आज भी इनके व्यवहार में परिलक्षित होता है। **" मेरी पारिवारिक पृष्ठभूमि इतनी अच्छी नहीं थी ; क्योंकि पिता कमाने वाले एकमात्र थे। माताजी मजदूरी तथा सिलाई करके थोड़ी बहुत मदद करती थीं। पिताजी जूते- चप्पल बनाने का काम करते थे। स्कूल की छुट्टियों के दौरान में रात पाली में दाल मील में काम करता था। उस मजदूरी से मैं अपनी पढ़ाई का खर्च तथा घर खर्चे के लिए देता था।"2** माता-पिता तथा 6 बहन- भाइयों का परिवार था। जिसमें दो बहनें इनसे बड़ी, दो बहनें छोटी तथा एक छोटा भाई था। इसलिए जिम्मेदारियां भी ज्यादा थी। दो बड़ी बहनों कि शादी हो चुकी थी। **"जब तक बड़ी बहनों की शादी नहीं हुई थी तब तक वह घर के कामों में हाथ बटाती थीं तथा मां के**

साथ मजदूरी करने जाया करती थीं। जब मेरा बैंक में चयन हुआ तब मेरे परिवार के पास एक हजार रुपए सिक्योरिटी जमा करने तक के पैसे नहीं थे। जैसे-तैसे उधार मांग कर वह पैसे जमा किए।"3 बैंक की नौकरी में आने के कुछ साल बाद ही इनकी दोनों बहनों तथा छोटे भाई की शादी हो गई थी। प्रशासनिक पद की तैयारी के दौरान इनकी भी शादी हो गई थी। शादी के बाद इनके दो बेटे हुए। दोनों बेटे शिक्षित हैं। एक ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है तथा दूसरे ने B.B.A.(मैनेजमेंट) किया है। इनका एक पोता तथा दो पोतियां हैं।

शिक्षा :- शिक्षा ही मनुष्य की वह पहली आवश्यकता होती है जिससे उसके व्यक्तित्व की इमारत बनकर खड़ी होती है। शिक्षा से व्यक्ति के भविष्य का निर्माण तो होता ही है साथ ही उसके भविष्य का संरक्षण भी होता है। शिक्षा से व्यक्ति के मस्तिष्क का विकास होता है साथ ही उसकी चिंतन शैली का भी विस्तार होता है। "**प्रारंभिक शिक्षा मेरी वहीं गांव नुमा कस्बे में ही हुई। मैंने हायर सेकेंडरी (उसे समय बोर्ड हुआ करता था) 11वीं कक्षा अपने गांव से पास की और 20 किलोमीटर दूर एक शहर है (अब जिला मुख्यालय हो गया है) वहां के नीमच शासकीय महाविद्यालय कॉलेज से मैंने प्रथम वर्ष बीकॉम की पढ़ाई की और स्नातक तक की शिक्षा अपने कस्बे से ही पूरी की।"4** पढ़ाई का जुनून इनके अंदर बचपन से ही था। इसलिए विपरीत परिस्थितियों में भी इन्होंने हार नहीं मानी। अपने गुरुजनों एवं प्रियजनों के मार्गदर्शन से इन्होंने उच्च शिक्षा हासिल की। इनकी पढ़ाई के प्रति जो एक ललक थी वह कभी खत्म नहीं हुई। स्नातक के बाद यह प्रशासनिक पद की तैयारी में जुट गए। प्रशासनिक सेवा में आने के बाद भी इनके पढ़ाई का सिलसिला जारी रहा।

"2003-4 के सत्र में मैंने प्राइवेट कैंडिडेट के रूप में इतिहास विषय से एम.ए. किया। इस विषय से मैं यूनिवर्सिटी टॉपर रहा साथ ही गोल्ड मेडलिस्ट भी रहा। इसके बाद मैंने ग्रामीण विकास से दोबारा म.ए.किया।"5 परिवार तथा समाज के प्रति जिम्मेदारियां का निर्वहन करते हुए भी आपने अपनी पढ़ाई को जारी रखा। शिक्षा के प्रति जो आपके अंदर जुनून था, उसे आपने कभी कम नहीं होने दिया। इससे यह साबित होता है कि व्यक्ति के अंदर यदि कुछ कर गुजरने की का जुनून हो तो वह कुछ भी कर सकता है। **"डबल म.ए. करने के बाद मैंने एम.बी.ए. (मानव संसाधन) की पढ़ाई की तथा उसके बाद पीएच-डी. की पढ़ाई पूरी की और वर्तमान में, मैं एल.एल.बी. की पढ़ाई कर रहा हूं।"6** बहुजन समाज ने शिक्षा के लिए कई सालों तक संघर्ष किया है। आज जब इसका अधिकार प्राप्त हुआ है तो सभी को इसका लाभ उठाना चाहिए। आप ही की तरह न केवल नौकरी के लिए बल्कि अपने ज्ञान के लिए भी हमें अपनी पढ़ाई जारी रखनी चाहिए। व्यक्ति जरा सी समस्याओं से घबराकर अपने कार्यों को छोड़ देता है ; लेकिन आपने विषम परिस्थितियों में भी अपना धैर्य एवं साहस बनाए रखा तथा अपने कार्यों को जारी रखा। 2022 में आप प्रशासनिक सेवा से सेवानिवृत हो चुके हैं। इसके साथ ही आपके पठन-पाठन का कार्य निरंतर जारी है और अन्य प्रोजेक्टों पर भी आपके कार्य चल रहे हैं।

नौकरी :- किसी भी व्यक्ति की पहली आवश्यकता रोजगार होता है। इसके अभाव में व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता । असंघोष जिस समाज से संबंध रखते थे वहां शिक्षा और नौकरी दोनों ही सपनों की बातें हुआ करती थीं ; लेकिन आपकी लगन एवं कड़े संघर्षों ने इस परंपरा को भी तोड़ा है। शुरुआती दौर में आप अपने पिताजी के जूता- चप्पल बनाने में उनकी मदद किया करते थे। समय के साथ-साथ आप अपनी पढ़ाई एवं नौकरी के लिए प्रयासरत रहे। **"हमारे लिए उसे समय शिक्षा के साथ-साथ पहली आवश्यकता थी कि किसी प्रकार रोजगार में लग जाएं। इससे खुद का जीवन यापन तो करेंगे ही साथ में अपने माता-पिता एवं भाई- बहनों की कुछ मदद कर पाए। उस समय बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ ही था ; इसलिए भरती काफी मात्रा में निकल रही थी और मैंने आवेदन कर दिया। छात्रवृत्ति के पैसों से किताबें खरीदी तथा दो राज्यों के लिए आवेदन किया राजस्थान एवं मध्य प्रदेश दोनों में ही मेरा चयन हो गया था फिर मैं मध्य प्रदेश " 1982 में मेरा ग्रेजुएशन पूरा होता है इस समय में बैंक में क्लर्क कैशियर की नौकरी में भी लग जाता हूं।"7** इस प्रकार आप अपनी पहली नौकरी को प्राप्त करने में सफल होते हैं। बैंक में रहते हुए अपने बैंक की विभागीय परीक्षाएं भी दी तथा उसमें सफल भी रहे। रुकना आपने कभी नहीं सीखा। इसलिए बैंक की नौकरी में आने के बाद भी आपकी पढ़ाई जारी रही और साथ प्रशासनिक पदों के लिए तैयारी भी जारी रही। **"पहले बैंकों का क्लोजिंग 31 दिसंबर को हुआ करता था और पी.एस.सी की परीक्षा 25 दिसंबर से शुरू हुआ करती थी। इसलिए बैंक के काम की अधिकता के कारण में पीएससी की परीक्षा नहीं दे पता था। राजीव गांधी के समय जब वित्तीय वर्ष बदला और मार्च में शिफ्ट हुआ तो मैं दिसंबर पी.एस.सी. की तैयारी करके परीक्षा दी और प्रथम प्रयास में मेरा चयन कोषालय अधिकारी के पद पर हुआ ; लेकिन मैंने वह नौकरी ज्वाइन नहीं की और अपनी बैंक की नौकरी में बना रहा। और अगले साल फिर मैंने दिसंबर के एग्जाम की तैयारी की और मेरा चयन हुआ और मैं राज्य प्रशासनिक सेवा में चयनित हूं और तब से मैं नौकरी करने लगा।"8**

जीवन में कई उतार- चढ़ाव आए ; लेकिन आप सकारात्मक दृष्टि के साथ हमेशा आगे बढ़ते रहे। यही आपके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी पहचान है। व्यक्ति विषम परिस्थितियों में कई गलत मार्ग अपना लेता है ; लेकिन यदि वह सकारात्मक दृष्टिकोण रखे तो कई परेशानियों से बचकर एक अच्छा जीवन चुन सकता है।

कृतित्व :- असंगघोष जी कि कविताओं का विभिन्न महत्वपूर्ण पत्र- पत्रिकाओं में प्रकाशन होता आ रहा है। आपकी कविताओं का अनुवाद विभिन्न भाषाओं जैसे- पंजाबी, मराठी, गुजराती, नेपाली, असमी, उड़िया तथा मलयालम आदि में प्रकाशित हैं। आपके संपादन में जबलपुर मध्य प्रदेश से प्रकाशित होने वाली महत्वपूर्ण त्रैमासिक पत्रिका 'तीसरा पक्ष' का प्रकाशन हो रहा है। आपकी रचनाएं विभिन्न विश्वविद्यालयों के हिंदी पाठ्यक्रम में शामिल है तथा आपकी रचनाओं पर विभिन्न शोधार्थियों द्वारा पीएच-डी एवं एम.फिल. का कार्य चल रहा है।

अभी तक आपके 10 काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जो इस प्रकार हैं -

1. खामोश नहीं हूं मैं - यह द्वितीय संस्करण, 2011 में शिल्पायन, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। इसमें 37 कविताएं संकलित हैं। 1. सहारा अलगनी 2. हल्लाड़ी 3.हसीन सपने 4. समय और मैं 5.गणेश! बताओ तो 6.जाति जाती 7.शम्बूक 8.धर्म! तुम्हें तिलांजलि देता हूं 9.नदी सदियों से प्यासी है 10.तुम्हारी प्रत्याकृति 11.मोना तुम मेरी क्यों? 12. दर्द 13.वेलजी 14.सिलसिला 15.गौरैया : एक 16.गौरैया : दो 17.शांति कपोत 18.छप्पर फाड़ कर 19.राजा बहरा थे 20.गॉडफादर 21.मुझे ही....! 22.आखिर क्यों? 23.बिना शीर्षक 24.मीठा कांदा 25.जब चांद गिर पड़ेगा 26.चींटी का मरना 27.कहां हो मुक्तिदाता 28.पितृ ऋण 29.बहुत हो गया 30.मुझे गर्व है 31.रोको ब्राह्मण 32.तुम्हारी पवित्रता 33.अंधा-बहरा भगवान 34.सुनो ब्राह्मण! गाते सुना था 35.कंदील और 37.चाहता हूं। **"असंगघोष की कविताओं का यह पहला संग्रह है। यह कविताएं अपनी भूमि के अनुभवों के साथ अंकुराती हैं और आसपास के परिवेश से विकसित होती हैं। यह मूल स्वभाव में अपने 'बुरे वक्त' से निपटते आदमी की कविताएं हैं, जहां शताब्दियों से आबादी का एक बहुत बड़ा भाग, तबाही में पलकर, जीवन के रास्ते निकाल पाने में ही बीत जाता था। सहारा अलगनी, हल्लाड़ी, मीठा कांदा आदि ऐसी कविताएं हैं, जहां संघर्ष के बीच पूरी तरह मौजूद हैं। इस संग्रह की दूसरी कविताओं में संघर्ष के यही बीज अपना आकर पाते हैं और एक हद तक पुष्ट होते दिखाई देते हैं।"9**

2. हम गवाही देंगे - यह द्वितीय संस्करण है। इसका प्रकाशन शिल्पायन, दिल्ली से, 2010 में हुआ। यह 43 कविताओं का संकलन है। 1.तेरा प्रतिशोध 2.भगोरिया 3.आखिर कब तक? 4.तुझे रौंदूंगा 5.मां कसम 6.दादी दूर नहीं है 7.क्यों सबक लें? 8.अनाथ गौरैया 9.हां हम गवाही देंगे 10.ओ पृथ्वी 11.तुम भी! 12.अब भी चुप बनी रहोगी? 13.हां तुम्हीं ने 14.तेरी सरस्वती 15.कहां हो ईश्वर 16.दंगा 17.शैतान 18.जात का भय 19.मेरी याददाश्त 20.काट डालूंगा उन पैरों को 21.मुआवजा 22.नाव में सवार होती नदी 23.तुम्हारा दांव 24.गांधी के बंदर 25.दादी की रोड़ी 26.खा जाओ दीमकों 27.अंतर क्यों? 28.मौका परस्त 29.नामकरण संस्कार 30.मेरा दर्द 31.पुस्तक मेले से लौटते हुए 32.अपने-अपने सपने 33.गांधी और मैं 34.आह्वान 35.काश! कि 36.वहा! क्या न्याय है 37.तनिक पूछो सुलोचना 38.शुक्र है तुम नहीं गए 39.पुरखों को निमंत्रण 40.धुआंधार 41.लौटूंगा बार-बार 42.स्लम्स 43.मौत से एक फुट दूर। आपकी सभी कविताओं में आक्रोश एवं क्रोध का स्वर ध्वनित होता है। आपकी प्रत्येक रचना ब्राह्मणवादी विचारों पर प्रहार करती है।

"शुक्र है

चांद पर

अमरीकी

पहले पहल गए

और गाड़ आए

स्टार- स्ट्रिप्स

अगर तुम चले जाते

तो

क्या करते?

धर्म ध्वजा गाड़ आते!"10

3. मैं दूंगा मां कल जवाब - इसका प्रकाशन शिल्पायन, दिल्ली से 2012 में हुआ। यह 36 कविताओं का संकलन है। 1.अबकी बार 2.मेरी प्रतिक्रांति 3.भाड़ में जाए 4.तुम देर से क्यों मरे? 5.तुम्हें पुकारुंगा गला सूख जाने तक 6.आंसू खारे क्यों हैं 7.मैं भूल जाना चाहता हूं 8.कांच का दरकना 9.खूबसूरत बारिश 10.निर्जीव मनेरी! 11.गांधी मुझे मिला 12.बताओ तो 13.करते रहो अफसोस 14.मैं दूंगा माकूल जवाब 15.काला पहाड़ 16.यह सच है 17.कांदा 18.मेरी प्यारी बुलबुल 19.धाप्या डेढ़ 20.आततायी 21.इस बार बाढ़ नहीं आई 22.मौत 23.आजमन 24.क्या तुम हो 25.हर बात मानूं जरुरी तो नहीं 26.तथागत तुम क्यों मुस्कराए? 27. कठिन है डगर 28.दीप 29.देहदान 30.काहे की चिंता 31.मरजी तुम्हारी 32.नीम का फूल 33.मेरे ख्वाब 34.नींद 35.हां! मैं ही 36.क्यों आते हैं सपने। इस संग्रह की सबसे प्रसिद्ध रचना 'मैं दूंगा माकूल जवाब' में कवि सीधे-सीधे मनुवादी ताकतों को ललकारते हैं और साथ ही शिक्षा जागृति की बात करते हैं-

"तुम्हारी इस करनी पर

मेरी धमनियों में

खोल रहा है, बहता लहू

समय के साथ

इसका

मैं दूंगा माकूल जवाब

मेरी जगह

पढ़ेंगे मेरे बच्चे

जरूर"11

4. समय को इतिहास लिखने दो - इस काव्य संग्रह का प्रकाशन शिल्पायन, शाहदरा, दिल्ली से 2015 में हुआ है। इस संग्रह में 52 कविताओं का समावेशन है। 1. आदिकवि!! 2. बदलना ही होगा मुझे 3.हिसाब लेकर ही रहूंगा 4.मैं ही तुम्हें छोड़ देता हूं 5.आहुति 6.समय को इतिहास लिखने दो 7.दीवारें कब गवाही देंगी? 8.तेरे देवता को मैं नकारता हूं 9.यक्ष प्रश्न 10.तू मौन क्यों है? 11.तेरा ईश्वर 12.मंघाराम! 13.मां है नदी 14.आ मेरे साथ बैठ 15.समुद्र : तीन कविताएं 16.बदलाव 17.कदम बढ़ाना ही होगा 18.चुनौती 19.तुम ही जानो 20.लंपट 21.अब और नहीं 22.तीन गुल्ली 23.वल्दी कोरी की दफाई 24.मसनदी कवि 25.घर 26.मेरी परछाईं 27.इंतजार! 28.तेरी कालिख 29.इज्ज़त वाली जात 30.तब तक 31.कहता हूं अलविदा 32.उतार फेंकूंगा 33.सीढ़ियां 34.मां 35.मिलेंगे कभी 36.विद्रोह 37.भाग जा यहां से 38.हमारे नाम 39.घंटा 40.यह वह नहीं 41.ढकोसला 42.हुनर 43.प्रधानमंत्री का आना-जाना 44.जवाब है? 45.तेरा कुलीन कुल 46.विद्रोह की बू 47.सुनो! 48.तेरी चुप्पी 49.तैयार रह 50.कहां हो अगस्त्य ? 51.तुम तुम देखना कल ! 52.ओ मृत्यु तुम चली आओ। असंघोष दलित चेतना के कवि हैं तो स्वत: ही उनकी रचनाओं में उत्पीड़न का आक्रोश दिखाई देता है-

"तूने फिर कहा

इन्द्र देवता

मैं क्यों मानूं

तेरे इस छली,

कुटिल और विलासी को

देवता, इसके बाद के

तेरे हर देवता को मैं ना करता हूं।"12

5. ईश्वर की मौत - इस काव्य संग्रह का प्रकाशन, सान्निध्य बुक्स, दिल्ली से 2017 में हुआ। यह 56 रचनाओं का संग्रह है। 1. जाति की बू 2.अवसरवादी 3.नमक 4.गीला माल 5.खदेड़ दो 6.जला दो मशालें 7.ताक धिना धिन 8.मेहनत रंग लाएगी 9.हम ही ध्वस्त करेंगे 10.कब्र 11.प्रतिरोध 12.हम हिंदू कब थे ? 13.धार 14.वराह 15.आदमखोर 16.बीजूका 17.धूर्तता का पहाड़ 18.चीटियां 19.दोगलापन 20.भेदभाव 21.वह नहीं आएगा बाहर 22.आधुनिक दधीचि 23.तुम छोड़ सकोगे 24.ईश्वर की मौत 25.सुनो बजरंग बली 26.मरघट 27.जाति खत्म करो पहले 28.खोजनी ही होगी चिंगारी 29.पाखंड 30.चमगादड़ 31.कब आ रहे हो 32.सतीश स्तंभ 33.बरबस बजता ही जाता है 34. मेरी मां 35.कमल गुरुजी 36.काश! 37.अंकुराएंगे बगावत के बीच 38.नहीं जोड़ना हाथ 39.पहले विद्रोह 40.ईश्वर से सवाल 41.सीढ़ियां कब जाता रहे हो 42.ईश्वर 43.मुझे धूप का

इंतजार है 44.नया सवेरा 45.मंजिल पा ही लूंगा 46.मैं बागी बनूंगा 47.पाखंडी 48.तानाजी की गोह 49.शास्त्र में ही नष्ट करूंगा 50.हां, हम हैं चमार 51.मेरी भीतर की आग 52.खुला विद्रोह 53.हम आसमान जोतेंगे 54.सुनो न्यायमूर्तियों! 55.दुकान 56.चीख। असंग ने अपने काव्य में स्त्री चेतना की बात की है साथ ही शोषक वर्ग के प्रति आक्रोश भी व्यक्त किया है-

"तुम्हारी ही शह पर

हर किसी गांव में

एक दलित स्त्री

सरेआम नग्न कर

भरे बाजार

घुमाई जाती है,

फिर तुम्हारे ही गुरगों के द्वारा

सामूहिक बलात्कार के बाद

पत्थर पटक, डायन बता

उसकी नृशंस हत्या कर दी जाती है।" 13

6. अब मैं सांस ले रहा हूं - यह काव्य संकलन 2018 में, वह वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल 66 रचनाएं संकलित हैं। 1.फूंकूंगा तुझे मैं ही 2.मैं तैयार हूं 3.तुम नहीं जाओगे 4.गांधी का विज़न 5.वर्जनोओं की बेड़ियां 6.भेड़िये का सामना करना होगा 7.सुनो! निदान पुकार रहा है 8.नहीं होगी हमसे बेगार 9.राष्ट्रवाद 10.तुम्हारा पाखंड 11.हर सवाल का जवाब चाहिए 12.जाति खत्म कर 13.बेऩकाब करूंगा 14.मुर्दा अकड़ 15.सुन लो 16.हां, मैं हिंदू हूं 17.अपने रंग 18.लिख नहीं सकता प्रेम- कविताएं 19.उठाओ लठ्ठ 20.बंदर के हाथ उस्तरा 21.करोड़ों ग्राम 22.हम ही गुनहगार हैं 23.रक्तबीज 24.आदमखोर जानवर! 25.लगाऊंगा डायनामाइट 26.थामनी है हत्यारी तलवार 27.जवाब हम देंगे 28.सुअरमार बम 29.लगाम पर मेरा नियंत्रण है 30.क्या नहीं है जातिवाद 31.मिथकों को नकारता हूं 32.तेरा षड्यंत्र जगज़ाहिर हो रहा है 33.तुम हुंकार भरो 34.पत्थर के देवता 35.शब्दभेदी बाण 36.भड़वी श्रेष्ठता 37.मेरे मुंह में ज़ुबान है 38.ज़रूर पहुंचूंगा 39.सत्ता खोने का भय 40.ज्वालामुखी फटना ही है 41.तू कर मेरे काम 42.दुश्मन बहुत ही धूर्त है 43.अब नहीं ढोऊंगा तुझे 44.अब तेरी बारी है 45.मेरे बीज जमेंगे 46.तेरी समझ 47.तेरी चुप्पी 48.तू ख़ून का रंग बदलवा ले 49.कौन जात हो 50.तू नहीं सीख

पाएगा 51.अब मैं सांस ले रहा हूं 52.स्वानुभूति 53.दाना मांझी 54.सुनो द्रोणाचार्य! 55.बहुत ख़राब समय है 56.तेरी बेशर्मियों का रास्ता 57.मेरे दो हाथ काफ़ी हैं 58.लगाओ रांची पर धार 59.रक्त सने हाथ 60.तुम्हारे अपने हथियार 61.मेरा चयन 62.माल- ए- मुफ़्त 63.गुलाबी कागज़ का टुकड़ा 64.पाय लागी हुज़ूर 65.छोड़नी होंगी आदतें 66.डर। इस संग्रह की कविताएं मानवीय संवेदनाओं को जाग जोड़ती है तथा साथ ही अन्य असमानता शोषण के विरुद्ध प्रतिकार की चेतना का संचार करती हैं- **" मैं स्याह सड़क पर**

हल चाल

कोलतार पर

बीज बो रहा हूं

मुझे यक़ीन है

मेरे ख़ून-पसीने की

खाद औ' नमी पा

मेरे बीज

जमेंगे एक दिन।"14

7. हम ही हटाएंगे कोहरा - इसका प्रकाशन, सान्निध्य बुक्स, दिल्ली से 2018 में हुआ। इसमें 54 कविताएं संकलित हैं। 1. पक्षियों को वीजा दो 2.आज की नारी 3.मां और पिता 4.कब तक खैर मनाएगा? 5.तेरी खिलाफत 6.मुआवजा 7.राक्षस हो जाना चाहता हूं 8.हम सामना करेंगे 9.कलमुंहे 10.ये प्रभु कहां है? 11.तुम बताओ 12.तू चले आना 13.तेरा घोड़ा मेरे कब्जे में है 14.अस्तित्व 15.तू समेट अपना धंधा 16.वराह अवतार 17.धर्मराज 18.मैं हूं तेरे खिलाफ 19.मत दे उपदेश 20.प्रकाशित है मेरा रास्ता 21.मैंने बिगुल फूंक दिया है 22.मेरा पुरखा मेरा जुझार 23.अपने सांड को बांद ले 24.बनानी होगी सुरक्षा पाल 25.मनुवादी न्याय 26.में बनाता रहूंगा वसूले की धार 27.देखते रहना! 28.कनखजूरे! 29.बेजोड़ छल 30.अभिशप्त कौम 31.जिम्मेदार 32.हम ही हटाएंगे कोहरा 35.तू जहरीला है 36.तेरी नगंई 37.तू और तेरी श्रेष्ठता 38.एक दिन मैं रोदूंगा तुम्हें 37.रंगा सियार 38.नरश्रेष्ठ 39.जाति गायब करो ना पी.सी. सरकार 40.तेरा तिलिस्म हम तोड़ेंगे 41.आत्मविश्वास 42.छलिया 43.तेरी हड़प नीति 44.अब बच तू 45.दीमकों! चाटो 46.धूर्तता 47.जात का कीड़ा 48.हमें क्या 49.अच्छे दिन 50.इंकलाब! जिंदाबाद!! 51.तांडव 52.थूकता हूं तुझ पर 53.कहां का गुरु 54.गणेश का सर। कवि की संपूर्ण कविताएं मनुवादी ताकतों को तिलमिला देने वाली हैं **- "उसने कहा**

कि मैं जगतगुरु

मैं पूछ बैठा,

किस विधा में?

वह चुप रहा

पीछे से किसी ने कहा

ठग विधा में।"15

8. बंजर धरती के बीज - इसका प्रकाशन 2019 में, रश्मि प्रकाशन, लखनऊ से हुआ। इसमें कुल 56 कविताएं संग्रहित हैं। 1.समय का तकाजा 2.हमारा मक़सद 3.फूलों की प्रतीक्षा 4.भयग्रस्त हैं वे 5.उठो! मारो धक्का! 6.आम भी बौरा गये हैं 7.सरकार 8.नंदी 9.समरसता नहीं, सामानता 10.मेरा निशाना 11.बेशर्मी के फूल 12.मैं करवट ले रहा हूं 13.नयी स्फूर्ति 14.पाथरूट 15.प्रतिबंधों की नींव 16.तेरा थूक 17.राजा नंगा है 18.देशभक्ति का ठेका 19.पांव का जूता 20.तू मुझसे भयभीत क्यों है 21धड़कती हुई आग 22.ज़हर ख़त्म करो 23.पूज्य पुत्रिंग्ल 24.पशु पुत्र 25.बचा रहे यह लेवडा 26.अचानक के पीछे आखिर कौन था 27.उगाओ उजाले का बिरवा 28.फट पड़ेगा यह ज्वालामुखी 29.सिकलीगर गढ़ता है हथियार 30.थोड़े दिन तो गुजारो गुजरात में 31.जारी रहेगा प्रतिरोध 32.थकान से चूर ईश्वर 33.नहीं रहेगा यह भयावह समय 34.मरी गाय का डर 35.अनुत्तरित प्रश्न 36.ढोंगी परंपराओं के बीज 37.हमारी साहस की दरकार 38.जमकर विरोध करो 39.पहाड़ का गिरि में बदलना 40.धरती के पार-द्वार 41.लिखनी है एक इबादत 42.सांप ने केंचुली उतार दी 43.कहां था मंगल 44.रंग विदूषक 45.बंजर धरती के बीज 46.पांवों में बंधी बेड़ियां 47.तुम किसी के मोहताज़ नहीं 48.समझौतावादी नहीं हूं 49.इसके मुंह में जुबान है 50.घोसले स्थायी घर नहीं होते 51.मेरी सलाह मानो 52.तुम्हारा अतीत 53.ख़तरनाक गठजोड़ 54.मेरा जन्मना अधिकार 55.चार इमली के घर 56.हम कब 56.समझेंगे। जुल्म सहते एवं गुलामी का जीवन व्यतीत करते व्यक्तियों की भावनाओं को सभ्य शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। इसलिए कवि ने कटु से कटु शब्दों में षड्यंत्रकारियों की आलोचना की है- **"बड़े भाई**

यह तो बताओ

हमारी छाया तक से दूर भागता

तुम्हारा ईश्वर

अपने कानों पर

कब लपेटता है

अपनी आस्था से बाहर होते

मूतासूत्र!"16

9. हत्यारे फिर आएंगे - यह काव्य संग्रह 2021 में, सान्निध्य बुक्स, दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल 62 रचनाएं संकलित हैं। 1.अपनी कहो 2.चलो नंगे पांव निकलते हैं 3.गिद्ध 4.बैकुण्ठ 5.मारखडणी गाय 6.मोक्ष का रास्ता 7.न्याय 8.स्व पथ 9.मलेच्छ के घर उगे फूल 10.पृथ्वी गोल है 11.आखिर कब तक 12.आओ हमारे साथ 13.समानता 14.पहचानो.... कौन 15.कहां से आएगा ईश्वर 16.स्मृति का संविधान 17.चील का मूत 18.आगाज 19.उठो 20.बोलना ही होगा 21खड़ंजे 22.घाघ 23.कौन- सा हिंदू हूं 24.ईश्वर है ही नहीं कहीं 25.अन्नकूट 26.दुर्गंध मारता पानी 27.उत्पीड़न 28.ढोंग 29.मरजी मेरी 30.खरपतवार 31.तेरा पेट 32.नरबली! 33.मंतव्य 34.सौंदर्यबोध 35.जोहर 36.चुकी हुई टोपें 37.कद 38.पुल 39.भारतीय मार्क्सवादी 40.बारिश का इंतजार 41.भारत माता की जय 42.समुद्र 43.गद्दीनशीन किन्नर 44.भाड़ कब झौंकेगा..! 45.यात्री 46.जूतों का अस्पताल 47.नेहा उर्फ़ निशान 48परजीवी 49.खुदगर्ज गड़रिया और बकरियां 50.जाति के साइलो 51.कलदार 52.फुटपाथी दुकान पर बैठा ईश्वर 53.दो किलो चावल और मौत 54.मां की कामयाबी 55.उदा बा का चौंतरा 56.हत्यारे फिर आएंगे 57.विश्व गौरैया दिवस 58.मोती काका 59.खड़ा पहाड़ 60.हर शिख पर उल्लू बैठा है 61.कविता का प्रसव 62भूरा भगत। जन्म से अपमानित जीवन जीने के उपरांत भी प्रकृति के प्रति कोमलता बचाए रखना कवि की बहुत बड़ी उपलब्धि है। काव्य में संकलित कविता 'विश्व गोरिया दिवस' इसका उदाहरण है- **"लेकिन उसके प्रजनन के सारे ठिकानों पर**

लगा दिए जब से हमने सुंदर-सुंदर सुरक्षा कवच

गौरैया का निर्बाध आना- जाना

हमारे घरों में

बाधित हो गया।"17

10. कौन जाता है वहां - इस काव्य संग्रह का प्रकाशन, 2023 में, वाणी प्रकाशन, दिल्ली से हुआ है। यह 60 कविताओं का संग्रह है। 1.कविता का शीर्षक 2.दकियानूसी भरे उपाय 3.मल्टी स्टोरी और मैं 4.बुरा वक्त़ भी गुज़र जायेगा 5.भड़भूंजा चाचा कि भाड़ 6.चोट 7.भात दे मां 8.रायता 9.असहज हवा 10.जय हो 11.सनक 12.सपने और मेरा सामान 13.बाज़ार का झण्डा 14.छल विद्या 15.वो सिर पर चढ़ने को आमादा है 16.हमारा पसीजना 17.जागते हुए सपने 18.प्रकृत ज्ञान 19.उजाले की राह को चौड़ी करो 20.सुसुप्त ज्वालामुखी 21.चीखों से डर 22.चुप रहना

घातक होगा 23.आंखों चढ़ी पट्टियां 24.कड़ी निन्दा 25.अलग दुनिया 26.मेरा एटीट्यूड 27.तुम्हें मुबारक उजियारा, तुम्हारा 28.प्रतिष्ठा में प्राण 29.मुकर्रर है ऐसा समय 30.कौन जाता है वहां 31.घण्टा 32.लौटना लौटना भी है 33.तुम्हारा श्राद्ध 34.काम क्या करते हो 35.खुजली 36.देवी -देवता की फ़ौज 37.ठेका 38.झूठ से संभलो 39.नीम चढ़े सांप 40.बराबरी का दड़बा 41.अश्वमेध का घोड़ा 42.मकड़जाल 43.फेंके गए पत्थर 44.शब्दवेदधी रणबांकुरे 45.हौसला 46.देवभाषा और हम 47.ईश्वर, मां-बाप 48.आंखों चढ़ा अंखोड़ा 49.वाकई ताक़तवर हैं हम 50.मैं गूंगा नहीं हूं 51.पंचावक्र 52.हमारा अपना समय 53.में मां के पास हूं 54.कोविद-19 55.भूख 56.सहेजी रोटियां 57.लॉक डाउन 58.कोरोना और एकांतवास 59.कोरोना देवी 60.दूसरा दौर। इस काव्य संग्रह में कवि ने कोविड नामक महामारी का भी हृदय विदारक चित्रण किया गया है- **"क्या यहां ऐसा कोई व्यक्ति है**

जिसने बूढी हो चुकी गंगा को

लाशें ढोते नहीं देखा हो

शतरंज की बिसात जैसी

जलती हुई ढ़ेरों चिताओं को नहीं देखा हो

श्मशानों के बाहर अपनी बारी की प्रतीक्षा करती लाशों को

ना देखा हो।"18

प्राप्त सम्मान :- लेखक को उनके साहित्य के लिए विभिन्न पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है। जो इस प्रकार हैं-

1. मध्य प्रदेश दलित साहित्य अकादमी, उज्जैन का द्वितीय पुरस्कार 2002 में प्राप्त किया।

2. सृजन गाथा सम्मान -2013 में मिला।

3. गुरु घासीदास सम्मान- 2016 में प्राप्त किया।

4. भगवान दास हिंदी साहित्य सम्मान- 2017 में मिला।

5. केशव पांडे कृति कविता सम्मान -2019 में प्राप्त किया।

6. मंतव्य सम्मान- 2019 में मिला।

निष्कर्ष :- असंगघोष जी की कविताएं विकल मन की कविताएं हैं। दलित समाज से संबंध रखने के कारण ही इनके काव्य की भाषा नुकीली, पेनी एवं कठोर है। उनकी कविताओं में

भोगा हुआ यथार्थ है। प्रत्येक रचना मनुवादी खोखली मानसिकता की गवाही देती है। संकीर्ण मानसिकता को जग जाहिर करना कवि के साहस को प्रदर्शित करता है। असंग की कविताऐं नारी चेतना, सामाजिक न्याय, शिक्षा का अधिकार, मानवता, बाह्य आडम्बरों का विरोध, मानवाधिकार, पर्यावरण संरक्षण, महामारी का प्रकोप, जातिगत भेदभाव, स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति आदि कई गंभीर मुद्दों की अभिव्यक्ति है। लेखक डॉ भीमराव अंबेडकर के विचारों को संचार कर रहे हैं। वह भी चाहते हैं कि समाज में सभी को समान समानता लाई जाए। प्रत्येक वस्तु पर सभी वर्गों का समान अधिकार हो। हर मनुष्य अपने अनुसार जीवन व्यतीत कर सके। बाकियों की तरह लेखक उच्च पदासीन होने पर अपने समाज से पृथक नहीं हुआ वरन् उसके अधिकारों के लिए प्रयासरत है। लेखक का यह संघर्ष आज भी चल रहा है। इनका संपूर्ण काव्य दलित समाज को समर्पित है। जिसमें बार-बार ये समाज को उभारने का प्रयास कर रहे हैं तथा प्रेरित कर रहे हैं।

शोध संदर्भ :-

1. साक्षात्कार , दिनांक - 16/ 10/ 2024

2. वही,

3. वही,

4. वही,

5. वही,

6. वही,

7. वही,

8. वही,

9.असंगघोष, खामोश नहीं हूं मैं, शिल्पायन प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2011, मुख पृष्ठ(मलय)

10. असंगघोष, हम गवाही देंगे, शिल्पायन प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2010, पृ. 95

11. असंगघोष, मैं दूंगा माकूल जवाब, शिल्पायन प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, संस्करण,

2012, पृ. 37

12.असंगघोष, समय को इतिहास लिखने दो, शिल्पायन प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, संस्करण, 2015, पृ. 25

13. असंगघोष, ईश्वर की मौत, रश्मि प्रकाशन, लखनऊ, पहला संस्करण, 2019, पृ. 106

14. असंगघोष, अब मैं सांस ले रहा हूं, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2018, पृ. 81

15. असंगघोष, हम ही हटाएंगे कोहरा, सान्निध्य बुक्स, गांधीनगर, दिल्ली, संस्करण, 2018, पृ.95

16. असंगघोष, बंजर धरती के बीज, रश्मि प्रकाशन, पहला संस्करण, 2019, पृ. 63

17. असंगघोष, हत्यारे फिर आएंगे, सान्निध्य बुक्स, गांधीनगर, दिल्ली, पृ. 114

18. असंगघोष, कौन जाता है वहां, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2023 पृ. 118